नात्ज़ियों से छिपते-छिपाते

लेखनः डेविड ए. एडलर
चित्रः कैरन रित्ज़
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

नात्ज़ियों से छिपते-छिपाते

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः कैरन रित्ज़

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लोर का जन्म द्वितीय विश्व युद्ध के कुछ ही पहले हुआ था। उसके माता-पिता यहूदी थे। अपने देश में एडॉल्फ हिटलर के सत्ता में आने के बाद वे नात्ज़ियों से बचने के लिए हॉलैण्ड भागे थे। पर 1940 में जर्मन सेना ने हॉलैण्ड पर हमला किया। अब वे वहाँ भी सुरक्षित नहीं थे।

चार साल की उम्र में लोर को माता-पिता से अलग छिपने भेजा गया। पहले एम्स्टर्डैम के ही एक दम्पति के पास, बाद में एक डच खेतिहर इलाके में शाउटन परिवार के साथ रहने भेजा गया। जब भी नात्ज़ी उनके खेत के पास आते शाउटन परिवार लोर को पास के किसी गाँव में भेज देता, या एक खुफिया कमरे में छिपा देता। लोर ने कुछ साल यों छिपते-छिपाते बिताए। लोर को अपनी देखभाल करने वाले शाउटन परिवार से प्यार हो गया। उनकी कोशिशों के कारण ही तो बच सकी और बाद में अपने माता-पिता के पास लौट सकी थी।

लोर बेयर की सत्य कथा पर आधारित यह मार्मिक कथा एक बालिका की नज़रों से यहूदियों के नरसंहार का वर्णन करती है।

नात्ज़ियों से छिपते-छिपाते

लेखनः डेविड ए. एडलर

चित्रः कैरन रित्ज़

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लेखक इस पाण्डुलिपि को तैयार करने में लोर बेयर के सहकार का शुक्रगुज़ार है। हिडन चाइल्ड फाउन्डेशन/एडीएल की एन शोर का भी शुक्रिया अदा करता है।

अरन्स्ट बेयर का जन्म 1907 में जर्मनी में हुआ था। उसके माता-पिता व दादा-दादी भी वहीं पैदा हुए थे। बेयर परिवार वफ़ादार जर्मन नागरिक थे। पर 1933 में यहूदी होने के कारण अरन्स्ट बेयर को लगा कि उसे अपनी जन्मभूमि छोड़नी ही पड़ेगी।

उसी वर्ष जनवरी में नात्ज़ी पार्टी के अध्यक्ष एडॉल्फ हिटलर जर्मन सरकार के चांसलर बने। चांसलर बनने के तुरन्त बाद ही यहूदियों की दुकानों का बहिष्कार शुरू हुआ। तब उनकी लिखी किताबें जलाई जाने लगीं, उन्हें उनकी नौकरियों से हटाया जाने लगा। हर जगह यहूदियों की "ज़रूरत नहीं" के नोटिस दिखाई देने लगे।

अरन्स्ट बेयर खुद को असुरक्षित महसूस करने लगे। उन्होंने अपना घर, अपना काम, और अपनी प्रेमिका एड़िथ श्मिट तक को छोड़ा और हॉलैण्ड के एक शहर एम्स्टर्डैम चले गए। वहाँ उन्होंने अपने दोस्त हर्बर्ट गॉटत्शाल के साथ एक कसाई की दुकान खोली।

1934 में एडिथ, श्मिट अरन्स्ट के पास एम्स्टर्डैम आ गईं। उन दोनों ने शादी की और हर्बर्ट व उनकी पत्नी एरना के साथ अपनी दुकान के पास ही एक छोटा-सा घर किराए पर ले लिया।

बेयर दम्पति इस बात से खुश थे कि वे एम्स्टर्डैम आ गए थे। अगले कुछ वर्षों में जर्मनी में और भी यहूदी विरोधी कानून पारित किए गए। ऐलान कर दिया गया कि यहूदी जर्मनी के नागरिक ही नहीं हैं। उन्हें जर्मनी का झंडा फहराने की इजाज़त अब नहीं थी। जर्मनी के हज़ारों यहूदी भाग कर हॉलैण्ड गए।

जिस नफ़रत से बच कर बेयर दम्पति भागा था, वह नफ़रत अब हर ओर फैल रही थी।

बेयर व गॉटत्शाल दम्पतियों के एम्स्टर्डैम आने के बाद के वर्षों में एडॉल्फ हिटलर युद्ध की तैयारी करता रहा था। मार्च 1938 में हिटलर ने जर्मन सेनाओं को अपने पडौसी देश ऑस्ट्रिया भेजा और उसे वृहद जर्मनी का हिस्सा करार दिया। 1938 की पतझड़ में जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया के एक भाग सुडैटनलैण्ड पर कब्ज़ा कर लिया। सितम्बर 1939 में जर्मन सेनाओं ने पोलैण्ड पर हमला किया। इसके दो दिन बाद ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी से युद्ध का ऐलान कर दिया।

1938 में जर्मनी द्वारा ऑस्ट्रिया और सुडैटनलैण्ड हथियाने के बाद ही गॉटत्शाल व बेयर दम्पतियों को एक-एक बच्चा हुआ।

पर हर्बर्ट गॉटत्शाल ने तो अपने एकलौते बेटे को देखा तक नहीं। 1938 की शुरुआत में ही हृदयघात से उनकी मौत हो गई। उनके बेटे हांस का जन्म कुछ सप्ताह बाद मार्च के महीने में हुआ। एडिथ और अरन्स्ट की बेटी लोर का जन्म अगस्त में हुआ।

लोर बेयर के जन्म के कुछ समय बाद ही उसके नाना जूलियस शिमट मिलने आए। एडिथ बेयर अपने पिता के जर्मनी से निकल आने पर बेहद खुश थीं। उन्होंने अपने पिता को एम्स्टर्डैम में बसने को मना लिया। उन्हें लगा कि वे यहाँ महफ़ूज़ रहेंगे।

बेयर व गॉटत्शाल परिवार जिस घर में रहते थे, जूलियस शिमट भी उसी में रहने लगे। दिन में जब अरन्स्ट और एडिथ दुकान पर जाते वे लोर की देखभाल करते। पहले वे उसे बच्चागाड़ी में घुमाते, बाद में जब लोर बड़ी हो गई दोनों लम्बी सैरों पर निकलते। लोर को अपने नाना से बड़ा प्यार था। वह उन्हें 'ओपा' कहा करती थी।

लोर को खेलना अच्छा लगता था। वह और हांस मिल-बांट कर खिलौनों से घर-घर और डॉक्टर-डॉक्टर खेला करते थे। लोर का पसन्दीदा खेल था छुपम-छिपाई। और छिपने की उसकी पसन्दीदा जगह थी कम्बल के नीचे!

10 मई 1940 के दिन जर्मन सेना ने हॉलैण्ड पर हमला किया। कुछ दिनों बाद हॉलैण्ड की सेना ने समर्पण कर दिया। महारानी विलहैल्मीना और उनकी सरकार के सदस्य बच कर ब्रिटेन भाग गए।

अरन्स्ट बेयर भी जान बचा भागना चाहते थे। उन्होंने अपने और परिवार के सभी लोगों के लिए वीज़ा के आवेदन दिए। पर संयुक्त राज्य अमरीका और क्यूबा के प्रतिनिधियों ने वीज़ा देने से इन्कार कर दिया।

जर्मन सेना के पीछे-पीछे नात्ज़ी भी हॉलैण्ड आ पहुँचे।

उन्होंने सबसे पहले तो यहूदी विरोधी कानून लागू किए। यहूदियों के लिए ख़रीददारी करने का समय दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक सीमित कर दिया गया। तब उनकी सम्पत्तियाँ ज़ब्त कर ली गईं। उनकी नौकरियाँ छीन ली गईं। मई 1942 से उन्हें पीले सितारे का निशान पहनने पर बाध्य किया गया, ताकि सबको मालूम रहे कि कौन यहूदी है।

तब गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं।

गिरफ्तार यहूदियों को वैस्टबार्क भेजा जाने लगा, जो हॉलैण्ड की उत्तर-पश्चिम में बनाया गया एक ट्रांज़िट और कार्य शिविर था। वहाँ से ज़्यादातर लोगों को आउत्श्वित्ज़ तथा सोबिबो के यातना शिविरों में ले जाया जाता था। जहाँ उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता था। पहले नात्ज़ियों ने केवल बेरोज़गार यहूदियों को गिरफ्तार किया। तब बाकियों की धर-पकड़ शुरू हो गई।

मार्च 1943 में बेयर परिवार के दरवाज़े को किसीने ज़ोर से खड़खड़ाया। दो बन्दूकों से लैस वर्दीधारी नात्ज़ी जबरन अन्दर घुस आए।

लोर डर कर सीढ़ियों के नीचे छिप गई।

नात्ज़ियों ने एडिथ बेयर को कुछ कागज़ दिखाए। वे 'ओपा' के लिए आए थे। एडिथ रो पड़ीं। उन्होंने अपने वृद्ध पिता पर रहम करने की गुहार की। "आप उन्हें नहीं ले जा सकते!" वे चीखीं। "नहीं ले जा सकते!"

पर वे ले गए।

एडिथ, अरन्स्ट और लोर ने ओपा को फिर कभी नहीं देखा।

ओपा को कुछ महीनों तक वेस्टबार्क में रखा गया। तब वहाँ से जर्मनी में यहूदियों के लिए बनाए बर्गन-बेल्सन के यातना शिविर में ले जाया गया, जहाँ उनकी मौत हो गई।

एडिथ व अरन्स्ट बेयर और एरना गॉटत्शाल जानते थे कि नात्ज़ी फिर आएंगे। उन्होंने तय कि वे जान बचाने के लिए छिपेंगे। उन्हें लगा कि उनके बच्चों को माँ-बाप के साथ नहीं छिपना चाहिए। ऐसा करने से वे सुरक्षित नहीं रह सकेंगे।

बेयर दम्पति ने तय किया कि वे लोर को एल्से व सैम आइज़ैक्स के घर ले जाएंगे। वे उन्हें अपनी कसाई की दुकान से जानते थे। पर उन्होंने लोर को यह नहीं बताया कि वे उसे वहाँ क्यों ले जा रहे हैं। वे नन्ही लोर को डराना नहीं चाहते थे। उन्होंने बस इतना कहा कि "तुम किसीको यह न बताना कि तुम्हारा नाम बेयर है, और यह भी न बताना कि तुम यहूदी हो।"

"अच्छी बच्ची बनाना," एडिथ और अरन्स्ट ने लोर को समझाया। "हम जल्द ही तुमसे मिलेंगे।" इतना कह वे चले गए।

लोर बेहद डर गई। वह सिर्फ साढ़े चार साल ही की तो थी। उसे समझ ही न आया कि उसके माता-पिता ने उसे किसी और को क्यों सौंप दिया है। उसे लगा उसने ज़रूर कुछ गलती की होगी।

लोर आइज़ैक्स दम्पत्ति के साथ केवल सप्ताह भर ही रही। आइज़ैक्स को चिन्ता होने लगी कि उनके पड़ौसियों को यह पता न लग जाए कि उन्होंने एक यहूदी बच्ची को छिपा रखा है। या यह कि सैम खुद भी एक यहूदी है। अगले कुछ सप्ताहों में उन्होंने लोर को कई जगहों पर छिपने भेजा। पर नात्ज़ी तो चारों ओर मौजूद थे। हर दिन और अधिक लोगों की गिरफ्तारियाँ हो रही थीं। एम्स्टर्डैम में कोई ठौर-ठिकाना सुरक्षित नहीं बचा था।

अप्रेल 1943 में सैम आइज़ैक्स लोर को रेलगाड़ी में बिठा कर ओर्न ले गए, जो डच कृषि क्षेत्र का केन्द्र था। उन्हें स्टेशन पर ही दो साइकिल-सवार मिले। उन्होंने लोर से कहा कि उसका नाम अब से लोर क्रुक होगा। तब एक ने उसे अपनी साइकिल के हत्थे पर बैठाया और उसे छिपने की एक नई जगह ले गए। यह जगह थी आउस्टरब्लॉकर के पास शाउटन फार्म।

वहाँ के लोगों ने लोर के बारे में ज़्यादा सवाल नहीं पूछे। जब वे पूछते भी तो मा व पा शाउटन कहते कि लोर उनकी भांजी है। उसके माता-पिता काम की तलाश में हैं। जब वे एक जगह टिक कर रहने लगेंगे, तो बिटिया उनके पास रहने चली जाएगी।

शाउटन दम्पति के पाँच बड़े बच्चे थे। तीन बेटे और दो बेटियाँ। उनकी सबसे छोटी बेटी कॉर्नेलिया बीस बरस की थी। लोर को उसके ही कमरे में रखा गया।

कॉर्नेलिया लोर से एक माँ-सा बरताव करने लगी।

रात को लोर अक्सर डर जाया करती थी। उसे लगता कि अगर वह अपनी आँखें बन्द कर लेगी तो कॉर्नेलिया भी चली जाएगी। सो कॉर्नेलिया उसका हाथ पकड़े रहती ताकि वह सो सके।

शाउटन फार्म लोर के लिए एक नई ही दुनिया थी। आउस्टरब्लॉकर आने के पहले लोर ने कभी गायें, भेड़ें और इतनी दूर तक पसरी घास देखी ही नहीं थी! उसे खुले खेतों में दौड़ना अच्छा लगने लगा।

कॉर्नेलिया ने उसे गायों को दुहना, ब्रेड पकाना, मक्खन बिलोना और क्रीम बनाना सिखाया।

इतवार के दिन वह शाउटन परिवार के साथ गिरजे जाती। 1944 के आरंभ में उसने गिरजे के स्कूल जाना शुरू किया। उसके साथ पढ़ने वाले बच्चों को यह पता नहीं था कि वह यहूदी है। यह राज सिर्फ पादरी को पता था। वे ध्यान रखते थे कि लोर सुरक्षित रहे।

शाउटन परिवार के पास छिप कर पनाह लेने वाली सिर्फ लोर नहीं थी। नात्ज़ियों से बच कर भागने वाले कई लोग कुछ समय तक शाउटन परिवार के पास रुकते।

नात्ज़ी भी आते।

अगर उनके आने की ख़बर पहले ही मिल जाती, तो कॉर्नेलिया लोर को अपनी साइकिल पर बिठा पास के गाँव में अपनी बहन के घर ले जाती। वे वहाँ तब तक रुकते जब तक यह पता न चल जाता कि अब सब सुरक्षित हैं।

पर कई बार उनसे बच भागने का समय तक न मिलता।

तब लोर को जो अल्मारी सबसे पास हो, वहीं ले जाया जाता। उनके घर में फर्श पर लगे बोर्डों के नीचे एक खुफिया सुरंग बनी थी। वह सुरंग खलिहान में फूस की ढ़ेरी में छिपाए गए एक बड़े से बक्से तक जाती थी।

छुपना अब लोर के लिए एक खेल नहीं रहा था। उसे छिपने से डर लगने लगा था। उसे छिपते समय खांसने या छींकने की मनाही थी। उसे बिलकुल चुप रहना पड़ता था। ताकि नात्ज़ी उसका सुराग न पाएं।

लोर कभी अकेली नहीं छिपती थी। फूस की उस बड़ी-सी ढ़ेरी में हमेशा कुछ और लोग भी छिपे होते थे। वह उन्हें देख नहीं पाती थी। कभी-कभी उसे लगता था कि कहीं उसके माता-पिता अंधेरे में उसके साथ तो नहीं छिपे हैं।

छिपने की दूसरी सर्दियाँ, 1944-45 में बेहद कठिन रहीं। हॉलैण्ड के कई लोगों के पास अब खाने को कुछ नहीं बचा था। वे डच कृषि इलाके में अपने पैसे, चाँदी, गहने और दूसरी कीमती चीज़ें लेकर आते और उसके बदले में कुछ खाद्य सामग्री मांगते।

शाउटन परिवार इस तरह का नाइन्साफी भरा भुगतान नहीं लेता था। बड़ी ही उदारता से उनके पास जो कुछ होता उसमें से उन्हें कुछ न कुछ ज़रूर देता था।

पर जब नात्ज़ी सैनिक खाने का सामान लेने आते शाउटन परिवार कहता कि उनके पास कुछ भी नहीं है। दूध फट गया है, और फसल बिगड़ चुकी है।

1944 के मध्य तक जर्मनी युद्ध हारने लगा था। 25 अप्रेल 1945 में रूसी सेना ने जर्मनी की राजधानी बर्लिन को घेर लिया। 30 अप्रेल 1945 के दिन एडॉल्फ हिटलर ने आत्महत्या कर ली। आठ दिन बाद 8 मई को यूरोप का विजय दिवस आया। कई देशों की सेनाओं ने मिल कर जर्मन सेना को हरा दिया था।

शाउटन परिवार ने भी युद्ध खत्म होने का जश्न मनाया। इसके कुछ दिनों बाद कॉर्नेलिया ने लोर को बताया कि उसके माता-पिता उसे घर ले जाने आने वाले हैं।

लोर चक्कर में पड़ गई। उसे तो लगने लगा था कि फार्म ही उसका घर है। वह कॉर्नेलिया व शाउटन परिवार के साथ ही रहना चाहती थी।

एडिथ और अरन्स्ट बेयर पिछले दो सालों से उस दिन का सपना देखते रहे थे जब वे अपनी नन्ही को फिर से देख सकेंगे। उन्होंने कल्पना की थी कि लोर दौड़ कर आएगी और उनकी बाँहों में लिपट जाएगी।

पर वह नहीं आई

जब बेयर दम्पति उसे लेने आए, वह फिर से छिपने लगी। अपनी माँ और पिता से छिपने वह अपनी प्यारी कॉर्नेलिया के पीछे जा छिपी।

एडिथ और अरन्स्ट कुछ दिनों शाउटन परिवार के साथ रहे ताकि लोर उनकी मौजूदगी से सहज हो जाए। उन्होंने लोर को समझाया कि उसने कोई गलती नहीं की थी। वे उसे आइज़ैक्स परिवार के पास इसलिए छोड़ आए थे ताकि वह महफ़ूज़ रहे। इसलिए क्योंकि वे उससे बेइन्तहा प्यार करते थे।

दरअसल एडिथ और अरन्स्ट आउस्टरब्लॉकर के पास ही छिपे रहे थे। विजय दिवस के बाद उन्होंने एल्सी व सैम आइज़ैक्स से सम्पर्क साधा था। तब उन्हें पता चला कि लोर अब कहाँ है।

लोर का दोस्त हांस गॉटत्शाल और उसकी माँ एरना भी बच सके थे। हांस एक ईसाई परिवार के साथ हॉलैण्ड की राजधानी द हेग में रहा था। एरना एम्स्टर्डैम में एक ईसाई महिला के अपार्टमेंट में छिपी रही थी। एक ख़ौफनाक एसएस टुकड़ी का वर्दीधारी नात्ज़ी भी उसी इमारत में रहता था। एरना को उससे बचने के लिए खिड़की तक से दूर रहना पड़ता था। उसने उस अपार्टमेंट के बाहर कभी कदम तक नहीं रखा था।

शाउटन परिवार के साथ कुछ दिन गुज़ारने के बाद एडिथ, अरन्स्ट और लोर बेयर एम्स्टर्डैम लौटे। छिपने के दिन अब लद चुके थे। वे सब एक बार फिर साथ-साथ थे। 1947 में बेयर परिवार संयुक्त राज्य अमरीका चला गया।

पर वहाँ भी एडिथ बेयर को अपनी नन्ही को खो देने का डर सताता रहा। हर सुबह लोर को स्कूल छोड़ने के पहले एडिथ लोर से वादा करवाती कि वह दोपहर को खाने की छुट्टी में उसे देख हाथ हिलाएगी।

एडिथ स्कूल के पास ही एक कारखाने में काम करती थी। ठीक बारह बजे वह काम बन्द कर खिड़की से लोर को देखती थी। लोर को अपने माँ-पिता पर भरोसा करने, उन्हें फिर से प्यार करने में कई साल लगे। पर कम से कम अब वह महफ़ूज़ थी। वह नात्ज़ियों के नरसंहार से बच गई थी।

लेखक की कलम से

मई 1940 में, जर्मनी के हमले के पहले, हॉलैण्ड में 140,000 यहूदी रहते थे। इनमें से 23,000 जर्मनी से आए शरणार्थी थे। हॉलैण्ड में आने के बाद नात्ज़ियों के पहले फ़रमानों में एक यह था: जितने भी यहूदी जनवरी 1933 के बाद हॉलैण्ड आए थे उन्हें नज़रबन्दी शिविरों में भेजा जाए। साथ ही उनकी जायदाद ज़ब्त कर ली जाए। इस कारण लोर के प्यारे 'ओपा' को गिरफ्तार कर लिया गया था।

हॉलैण्ड में रहने वाले यहूदियों में से तक़रीबन 106,000 या 107,000 यहूदियों को मौत के शिविरों में भेजा गया। जहाँ उनमें से 100,000 से अधिक की हत्या कर दी गई। कुछ यहूदी हॉलैण्ड से बच कर निकल सके थे। अनुमान है कि 22,000 से 25,000 यहूदी जो नात्ज़ियों से बचने के लिए छिपे थे, उनमें से लगभग आधे ही युद्ध के बाद बच सके थे।

गॉटत्शाल परिवार भी 1947 में अमरीका गया। उसी साल जब बेयर परिवार भी वहाँ चला गया था। दोनों परिवारों में दोस्ती बनी रही।

1950 में बेयर दम्पति की दूसरी बेटी लिलियन का जन्म हुआ। लोर बेयर अब एक कलाकार और कला थेरेपिस्ट हैं। वे कुछ बार आउस्टरब्लॉकर लौटी हैं, ताकि शाउटन परिवार का शुक्रिया अदा कर सकें उन्हें बता सके कि वे बख़ूबी समझती हैं कि शाउटन परिवार ने अपने दिलों और घर को उनके लिए खोला और उनकी जान बचाई।

1992 में कमिशन फॉर द डेसिग्नेशन ऑफ द राइटियस (नेक लोगों को नामित करने वाला आयोग) ने थियोडोरस (पा), मारिया (मा) तथा कॉर्नेलिया शाउटन को 'राइटियस अमंग द नेशन्स्' के पदक से नवाज़ा। उनके नाम इज़रायल के गार्डन ऑफ द राइटियस में सम्मानित लोगों की दीवार पर खोद कर उकेरे गए। मार्च 1995 में उनके नेक कार्यों के लिए उन्हें इज़रायल का मानद नागरिक बनाया गया।

डेविड ए. एडलर किशोरों की अनेक पुस्कों के लेखक हैं। इनमें मशहूर सचित्र जीवनियों की श्रृंखला भी शामिल है। उन्होंने यहूदी संस्कृति, साहित्य व रीति-रिवाज़ों पर कई विख्यात पुस्तकें रची हैं, जैसे *हिल्डे एण्ड एलिः चिल्ड्रन ऑफ द होलोकास्ट* तथा *चाइल्ड ऑफ द वॉरसॉ घेट्टो* ।

मिस्टर एडलर अपने परिवार के साथ न्यू यॉर्क में रहते हैं।

कैरन रित्ज़ अपने परिवार के साथ सेंट पॉल, मिनियापोलिस में रहती हैं। उनकी इतिहास में विशेष रुचि है। उन्होंने किशोर पाठकों के लिए कई नॉन-फिक्शन पुस्तकों को चित्रित किया है। इनमें *एलिस आइलैण्डः डोरवे टू फ्रीडम* तथा *अ पिक्चरबुक ऑफ एन फ्रैंक* शामिल हैं।